पुस्तक समीक्षा

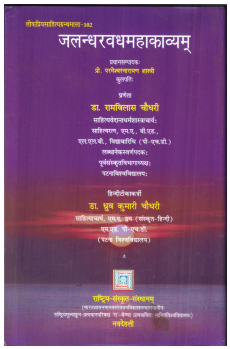

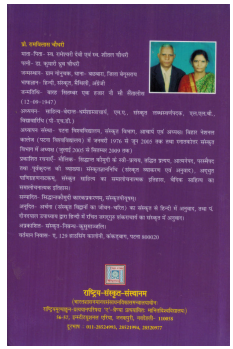

जलन्धरवधमहाकाव्यम्, संस्कृत महाकाव्य, प्रणेता- डा. रामविलास चौधरी, पूर्व संस्कृतविभागाध्यक्ष, पटना विश्वविद्यालय, पटना। हिन्दी अनुवाद- डा. ध्रुव कुमारी चौधरी। प्रधान सम्पादक- प्रो. परमेश्वरनारायण शास्त्री, कुलपति, राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थान, दिल्ली। प्रकाशक- कुलसचिव, राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, दिल्ली। प्रकाशन वर्ष- 2020. ISBN. 978-93-85791-46-8. मूल्य- 165 रुपये मात्र। कुल पृष्ठ- 176. सजिल्द।

डा. रामविलास चौधरी प्रणीत जलन्धरवध नामक महाकाव्य शिवपुराण (रुद्रसंहिता, युद्धखण्ड, अध्याय 13 से 26 पर्यन्त) की जलन्धर-वध कथा पर आधारित आधुनिक महाकाव्य है। इसमें 11 सर्ग हैं। इसमें समुद्र के पुत्र जलन्धर के जन्म-वृत्तान्त से लेकर वधपर्यन्त पूरी कथा को आधार बनाया गया है। एक बार बृहस्पति एवं इन्द्र कैलास दर्शन के लिए गये। कैलास के रास्ते में इन दोनों ने एक आकृति देखी, जिसे रास्ते से हट जाने के लिए कहा। जब वह आकृति नहीं हटी तो इन्द्र ने वज्र प्रहार कर दिया। उस आकृति के रूप में स्वयं भगवान् रुद्र थे। वे इन्द्र के वज्र प्रहारसे कुपित हो उठे। बाद में महादेव को पहचानने पर दोनों ने उनकी स्तुति की। इस स्तुति पर प्रन्न होकर भगवान् शिव ने अपने नेत्र से उत्पन्न तेज को समद्र में फेंक दिया। इसी तेज से जलन्धर की उत्पत्ति हुई। ब्रह्मा ने उस जलन्धर का अभिषेक किया। समय आने पर कालनेमि की पुत्री वृन्दा के साथ उसका विवाह हुआ। वह समुद्र के राज्य का राजा बन गया।

एक दिन उसने राहु के शिर काटे जाने का वृत्तान्त गुरु शुक्राचार्य से पूछा। इस पर शुक्राचार्य ने उसे समुद्रमन्थन, अमृत की उत्पत्ति तथा समुद्र से प्राप्त रत्नों को देवताओं के द्वारा ग्रहण किये जाने की पूरी कथा सुनायी। यह सुनकर जलन्धर ने देवताओं को उन रत्नों को वापस करने का संदेश भेजा इन्द्र के पास भेजा। इन्द्र के अस्वीकार करने पर दोनों पक्षों में युद्ध हुआ जिसमें देवतागण पराजित हो गये।

तब देवता भगवान् विष्णु की शरण में गये। विष्णु ने भी जलन्धर से युद्ध किया और उसके पराक्रम पर प्रसन्न होकर वरदान देने की पेशकश की। जलन्धरने वरदान में माँगा कि आप मेरी बहन के पति हैं अतः चार मास आप मेरे घर आकर मेरी बहन के साथ निवास करें। विष्णु ने इसे स्वीकार कर लिया।

इधर जलन्धर के उपद्रव से बचाने के लिए देवताओं ने नारद की स्तुति की। उपाय खोजते हुए नारद जलन्धर की नगरी पहुँचे और वहाँ उन्होंने पार्वती को पाने के लिए जलन्धर उकसाया। जलन्धर ने भगवान् शिव पर आक्रमण कर दिया। दोनों के बीच युद्ध हुआ। रणक्षेत्र में जलन्धर ने अपनी माया फैलायी तथा शिव के सैनिकों को सम्मोहित कर लिया। पार्वती के साथ रमण करने की इच्छा से शिव का रूप धर कर कैलास पहुँचा, जहाँ पार्वती उसे पहचान कर सावधान हो गयी। अब शिव-पार्वती ने तब जलन्धर से परेशान होकर उसका वध के लिए मन्त्रणा की, जिसमें विष्णु को भी सम्मिलित करने के लिए भगवान् शिव नें विष्णु को मोहित कर लिया। योजनानुसार मोहित विष्णु ने जलन्धर का रूप धारण कर वृन्दा के साथ रमण किया। बाद में पहचान जाने पर वृन्दा ने खिन्न होकर विष्णु को पत्नी-वियोग का शाप दिया औऱ वह अग्नि में प्रवेश कर गयी। इधर शिव और जलन्धर के बीच आमने सामने के युद्ध में जलन्धर का वध हुआ। विष्णु ने भी शिव की माया से प्रसृत मोह का भंग होने पर तुलसी के रूप में वृन्दा की उत्पत्ति की घोषणा की तथा अपनी पूजा में तुलसी की अनिवार्य उपस्थिति की घोषणा की।

इस महाकाव्य में कवि ने आधुनिक वर्णनों का भी समावेश किया है। सर्ग संख्या 7 में वसन्त वर्णन के क्रम में कृषकों की दुःस्थिति का वर्णन भी आया है तथा वर्तमान काल में सामान्य जनता के दैन्य का यथार्थपरक वर्णन भी किया गया है। किसान दिन-रात परिश्रम कर भी सुखी नहीं हैं। समाज में दहेज, घुसखोरी, धोखाघड़ी, व्यापारियों के द्वारा टैक्स चोरी आदि प्रवृत्तियाँ फैली हुई हैं-

वाणिज्यवृत्तौ विविधैरुपायैः करस्य चौर्ये वणिजः प्रवीणाः।
उद्धारलुब्धा अभियन्तृवर्गाः भवन्ति मान्याः धनिनः समाजे।। (7.26)

इस प्रकार, यह सम्पूर्ण महाकाव्य पौराणिक कथाओं पर आधारित होता हुआ भी आधुनिकताबोध के साथ प्रस्तुत किया गया है। यह वर्तमान काल में भी संस्कृत-रचना की अक्षुण्णता का प्रतिपादन करता है। यह सिद्ध करता है कि संस्कृत भाषा महज मृत भाषा नहीं है। इसमें एक जीवन्तता आज भी विद्यमान है।

हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशित होने के कारण हिन्दी के पाठकवर्ग के लिए भी यह पठनीय है। विद्वान् रचनाकार ने जलन्धरवध की पूरी कथा तथा परिस्थितियों का वर्णन कर यह सिद्ध किया है कि जलन्धर लक्ष्मी का भाई फलतः विष्णु का साला है। पहले उसने पार्वती को दूषित करने का प्रयास किया, जिसमें वह असफल रहा। इसके बाद शिव की इच्छा से मोहित विष्णु ने युद्धकाल में वृन्दा को साथ रमण किया। आधुनिक काल मे जिस प्रकार आर्य और अनार्य का भेद कर सामाजिक ऊँच-नीच के भेदभाव की बात की जाती है- ऐसी कोई बात मूलकथा में नहीं है। जलन्धरवध का उल्लेख सम्पूर्ण कथा के साथ होने पर विष्णु के ऊपर साम्यवादियों के द्वारा लगाये गये आरोप स्वतः व्यर्थ हो जाते हैं।

***

लेखकों से निवेदन

'धर्मायण' का अगला अंक **रामानन्दाचार्य-विशेषांक** के रूप में प्रस्तावित है। माघ कृष्ण सप्तमी तिथि को रामावत सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य रामानन्द की जयन्ती मनायी जाती है। उन्होंने सामाजिक समरसता के लिए **जात-पाँत पूछै नहि कोय हरि को भजै सो हरि को होय** का नारा देकर मध्यकाल में एक सामाजिक क्रान्ति का सूत्रपात किया था। बिहार में भी उनकी शिष्य-परम्परा तथा उनके अनेक सम्प्रदाय-गत स्थान हैं, जिन पर शोधकार्य नहीं हुए हैं। रामान्दाचार्य के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं बिहार के सन्दर्भ में विशेष रूप से उनकी शिष्य परम्परा पर केन्द्रित यह अंक प्रस्तावित है। साथ ही, माघ मास हमारी सनातन परम्परा में भी महत्त्वपूर्ण है। इसी मास सूर्य-व्रत के रूप में मकर-संक्रान्ति, अचला सप्तमी, सरस्वती-पूजा, तुषार-व्रत भी होते हैं। इन सभी विषयों पर आलेख इस विशेषांक हेतु आमन्त्रित हैं।

लेखकों से अनुरोध है कि संस्कृत के उद्धरणों का हिन्दी अनुवाद अवश्य दें, जिससे हिन्दी के पाठ उन्हें हृदयंगम कर सकें। इस अंक में व्यवहृत सन्दर्भ की शैली में लिखित सन्दर्भ के साथ शोधपरक आलेखों का प्रकाशन किया जायेगा। अपना टंकित अथवा हस्तलिखित आलेख हमारे ईमेल **dharmayan-hindi@gmail.com** पर अथवा ह्वाट्सएप सं- +91 9334468400 पर भेज सकते हैं। प्रकाशित आलेखों के लिए पत्रिका की ओर से पत्र-पुष्प की भी व्यवस्था है।